

ISSN 0973-2616

सी एस आई आर समाचार



वर्ष 24 अंक 6 जून 2007

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक
अनुसंधान परिषद् का वृह-सुलेदिन



सारस पीटी-2 ने अपनी पहली उड़ान भरी





14 सीट और बहु-भूमिका वाले हल्के परिवहन वायुयान सारस के द्वितीय मॉडल पीटी-2 ने 18 अप्रैल 2007 को प्रातः 9 बजकर 05 मिनट पर अपनी पहली सफल उड़ान भरी। सारस देश का प्रथम स्वदेशी नागरिक वायुयान है, जिसका विकास राष्ट्रीय वांतरिक्ष प्रयोगशालाएँ (एनएएल), बंगलुरु द्वारा किया गया है। सारस की प्रथम उड़ान का संचालन विंग कमांडर आर एस मक्कड द्वारा प्रमुख जांच विमान चालक के रूप में तथा विंग कमांडर ए मलिक द्वारा सह-विमान चालक के रूप में और विंग कमांडर एम.एस. राममोहन द्वारा उड़ान-जांच इंजीनियर के रूप में किया गया। ये सभी संचालक भारतीय वायुसेना के एयरक्राफ्ट प्रणाली तथा टैस्टिंग एस्टैब्लिशमेंट (एएसटीई) से थे, जो सारस का उड़ान जांच संगठन रहा है।

सारस के प्रथम मॉडल (पीटी-1) ने दिनांक 29 मई 2004 को अपनी पहली उड़ान तथा 22 अगस्त 2004 को श्री कपिल सिबल, विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी

एवं भूविज्ञान मंत्री की उपस्थिति में औपचारिक आरम्भिक उड़ान भरी। अब तक सारस पीटी-1 की 106 उड़ानों का सफलतापूर्वक संचालन किया गया है जिसमें फरवरी 2005 और फरवरी 2007 में आयोजित एयरो इंडिया हवाई प्रदर्शनी की उड़ानें भी सम्मिलित हैं।

द्वितीय मॉडल के डिजाइन बहुत से संशोधन किये गये हैं। इनमें : सर्वाधिक महत्वपूर्ण पीटी-1 में प्रयोग कि जाने वाले पीटी-6ए-66 (860एचपी प्रत्येक के स्थान पर पीटी-2 में दो उच्चत क्षमता के इंजनों पीटी-6ए-67 (1200एचपी प्रत्येक) का प्रयोग तथा वृहत् व्यास के नये नौदकों का प्रयोग सम्मिलित है। इसे विशेष रूप से अमेरिका के फेडरल एवियेशन रेगुलेशन 25 (एफएआर-25) जोकि सारस की प्रमाणीकारक मानव एजेन्सी है, के द्वारा एक इंजन के असफल हो जाने की अवस्था में निर्धारित की गयी स्ट्रिगेन्ट क्लाइम्ब ग्रेडिएन्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए किया गया है।

उच्चतर क्षमता के इंजन सारस के अन्य प्रदर्शन गुणों को भी सुधारने सहायक स्टबविंग संरचना तथा इंजन नसेल में भी नये इंजन के अनुसम संहोदन किया गया है। उड़ान नियन्त्रण प्रणाली



रूपरेखा, फ्लैप ऑपरेटिव प्रणाली, एवियोनिक्स तथा इलेक्ट्रिकल प्रणाली स्वरूपा इत्यादि में फ्लाइंट क्रू तथा रखरखाव स्टाफ से प्राप्त सुचनाओं का ध्यान में रखते हुए संशोधन किये गये हैं। इन सभी संशोधनों से पीटी-2 मानक वायुयान के अन्तिम उत्पादन के वेहद करीब आ गया है।

समान रूप से एक बार अनुकूलन कार्यक्रम भी सारस के लिए तैयार किया गया है जिसमें धात्विक संरचना के द्वारा, स्ट्रिक्ट फ्रेड्रीकेशन नियंत्रण, संयोजन के अधिकतम प्रयोग के द्वारा 500 किग्रा. तक भार घटाने का लक्ष्य रखा गया है। अन्तिम उत्पादन मानकों तथा धरातल व उड़ान जांच के संयोजन के द्वारा प्रमाणित करने के पश्चात एक अतिरिक्त मॉडल का निर्माण किया जाएगा। नागरिक उड्डयन महानिदेशक द्वारा एफएआर-25 मानक प्रमाणीकरण को 2009 के अन्त में तक्षित किया गया है।



नये, अधिक शक्तिशाली इंजनों (पीटी 6ए-67ए) के साथ सारस के द्वितीय मॉडल वायुयान की सीटी-एक्सआरएम ने बंगालुरु हवाई अड्डे से प्रातः 09.05 बजे उड़ान भरी तथा उड़ान कुल 40 मिनट की रही। वायुयान लगभग 9000 फीट की ऊँचाई तक पहुँचा तथा अधिकतम 150 नॉट की गति से उड़ा। विमान चालक ने वायुयान संचालन गुणों की जांच के लिए बहुत से छोटे-मोटे दाँव-पैच भी निष्पादित किये। वायुयान का उतरना भी उसकी उड़ान के अन्य चरणों की भाँति श्रेष्ठ ही था। फ्लाइंट क्रू ने बताया कि वायुयान ने आशा के अनुक्रम कार्य किया तथा इसमें कोई आश्चर्य नहीं था। फ्लाइंट पीसमीटर सामान्य तथा आशानुक्रम थे। दिग् कर्मांडर आर एस मन्कड प्रमुख जांच विमान चालक ने उड़ान के बाद कहा -

‘नये इंजनों के साथ वर्तमान सारस एक बहुत प्रभावकारी तथा शक्तिशाली मशीन जान पड़ता है। अपनी प्रथम उड़ान में सभी वायुयान प्रणाली के प्रदर्शन से सम्पूर्ण टीम सारस की व्यवसायिकता का पता चलता है।’

भारतीय वायुसेना के साथ चर्चा प्रगति पर है जो अपनी कुछ परिबहन तथा प्रशिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सारस का प्रारम्भिक उपभोक्ता बनेगा तथा वायुयान की उत्पादकता के लिए एचएएल से सहयोग

करेगा। वायुयान प्रदर्शन पीटी-2 में 7100 किग्रा. भार से उत्प्रेरित करने के द्वारा किया जाएगा। कुछ और डेटा एकत्रित हो जाने के पश्चात नागरिक उड्डयन मंत्रालय तथा विभिन्न ऑपरेटर्स के साथ पूर्वोत्तर क्षेत्रों तथा इसकी अन्य भूमिकाओं यथ, फीडर वायुयान, हल्के मालवाहक विमान, वायु एम्बुलेंस इत्यादि पर चर्चा की जाएगी।

नागरिक उड्डयन के वर्तमान झुकाव व छोटे कस्बों सहित देश के विभिन्न भागों की वायु-नेटवर्किंग की आवश्यकता की महत्ता समझते हुए सारस का वायु सम्पर्क जोड़ने, लोगों को लाने ले जाने तथा देश के सर्वांगीण विकास में विशिष्ट भूमिका स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। अतः पीटी-2 की पहली उड़ान इस दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है जो इस प्रकार देश में व्यवहार्य नागरिक वायुयान उद्योग की स्थापना करने में सहायक होगी।

डॉ. वी. कासिराव

डॉ. वी. कासिराव, प्रमुख, प्रलेखन विभाग, केन्द्रीय बर्म अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर), बर्नई ने हॉगकोंग पॉली टेक्नॉलॉजी



यूनिवर्सिटी, हॉगकोंग में आयोजित इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमेंट (आईसीआईटीएम-2007) नामक अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन में एक शोधपत्र, जिसका शीर्षक इलेक्ट्रॉनिक नॉलेज आरगनाइजेशन मैनेजमेंट (ई-कॉम) था, प्रस्तुत किया। उन्होंने आईसीआईटीएम-2007 में आईटी स्ट्रेटेजिज इन इन्फोर्मेशन मैनेजमेंट पर एक व्याख्यान भी दिया।

एमआरएसआई का सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार

डॉ. अंजना जैन तथा श्री एस. कल्याण सुन्दरम, मेटिरियल्स साइंस डिपार्टमेंट, राष्ट्रीय धातु विश्व प्रयोगशालाएं (एनएएल), बंगलुरु को श्री वी. वेधा प्रकाश तथा श्री एच.एच. कुमार के साथ राष्ट्रीय मौलिक प्रयोगशाला (एनपीएल), नई दिल्ली में मेटिरियल्स रिसर्च सोसायटी ऑफ इंडिया (एमआरएसआई) की 18वीं वार्षिक आमसभा (एजीएम) में प्रिगेशन एण्ड कैरेक्टराइजेशन ऑफ β -PVBF फिल्म नामक शोधपत्र के लिए सर्वश्रेष्ठ पोस्टर पुरस्कार से सम्मानित किया गया।



सीएसआईओ, चण्डीगढ़ व थापर विश्वविद्यालय, पटियाला के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

केन्द्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन, चण्डीगढ़ तथा थापर विश्वविद्यालय, पटियाला के बीच संयुक्त अनुसंधान कार्य तथा मानव संसाधन विकास को बढ़ावा देने के लिए 11 अप्रैल, 2007 को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर हुए। इसे अंतर्गत मैक्रो प्रौद्योगिकी, जैव-आण्विक इलेक्ट्रॉनिक्स, मैक्स एंड सिस्टम्स, न्यू मेटिरियल्स एंड करैक्टराइजेशन, विश्लेषणात्मक रसायन विज्ञान एवं जैव-रसायन विज्ञान, कृषि-विश्लेषणात्मक उपकरण विन्यास, इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग, क्वांटम उपकरण विन्यास, ऑप्टो-मैकेनिकल उपकरण विन्यास एवं मानव संसाधन विकास जैसे विषयों पर संयुक्त रूप से कार्य किया जाएगा। समझौते पर डॉ. पवन कपूर, निदेशक, सीएसआईओ तथा डॉ. अभिजीत मुखर्जी, निदेशक, थापर विश्वविद्यालय, पटियाला ने हस्ताक्षर किए। समझौते के अनुसार थापर विश्वविद्यालय, पटियाला के एम.एससी., बी.टेक. व एम.टेक. के विद्यार्थियों को संबंधित विशेषज्ञता के क्षेत्र में सीएसआईओ में परियोजना कार्य करने की अनुमति होगी तथा सीएसआईओ स्टाफ सदस्य विश्वविद्यालय में अनुसंधान एवं अनुप्रयोग के मावी क्षेत्रों में पीएच.डी. के लिए पंजीकृत हो सकेंगे। यह समझौता ज्ञापन सीएसआईओ के लिए अपने वृहत् ज्ञानाधार को शैक्षिक संस्थानों के साथ बांटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इससे न केवल उच्च गुणवत्ता संपन्न जनशक्ति का सृजन होगा, अपितु विभिन्न अहम क्षेत्रों में दुर्लभ बहुमूल्य संसाधनों का इष्टतम उपयोग भी किया जा सकेगा।

केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान, कारैकुड़ी में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

केन्द्रीय विद्युतरसायन अनुसंधान संस्थान, कारैकुड़ी में दिनांक 10 मई, 2007 को संस्थान में समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रातः 10 बजे अध्यक्ष महोदय श्री एन.यू. नायक के अध्यक्षीय भाषण से कार्यशाला की शुरुआत हुई। इस अवसर पर प्रयोजनमूलक हिन्दी-व्याकरण एवं वार्तालाप विषय पर यत्न्य देने के लिए डॉ. एम.पी. सुब्रह्मण्यन, प्रभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त), हिन्दी प्रभाग, अमेरिकन कॉलेज, मदुरै को आमंत्रित किया गया था।

इस अवसर पर श्री एन.यू. नायक ने हिन्दी भाषा की सरलता पर जोर डालते हुए कहा कि हिन्दी एक सरल भाषा है। यह आसानी से सीखी जा सकती है। कुछ समय

पहले वैज्ञानिक संस्थानों में हिन्दी का प्रयोग कम होता था। लेकिन आजकल वैज्ञानिक संस्थानों में भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें हिन्दी को बोतबाल में शामिल करना है तथा बार-बार अभ्यास करना है। इन विधियों से हिन्दी आसानी से सीखी जा सकती है।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में डॉ. एम.पी. सुब्रह्मण्यन ने हिन्दी भाषा के व्याकरण की सविस्तार जानकारी दी तथा सूत्रात्मक रूप से व्याकरण के विभिन्न कालों की व्याख्या की। इसके साथ ही एलसीडी के माध्यम से विभिन्न अक्षरों के उच्चारण से



संबंधित बारीकियों से संस्थान के कर्मचारियों को अवगत कराया।

द्वितीय सत्र में डॉ. सुब्रह्मण्यन ने हिन्दी भाषा के प्रयोगात्मक पक्ष की उदाहरण सहित व्याख्या की। उन्होंने बड़े ही रोचक ढंग से दिन प्रतिदिन उपयोग में आने वाले वाक्यों के द्वारा हिन्दी भाषा से जुड़े व्यावहारिक पक्ष का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी भाषा में लिंग की समस्या एक महत्वपूर्ण समस्या है जिसे हिन्दीतर भाषी लोगों द्वारा स्वाभाविक रूप से महसूस किया जाता है। इसे ध्यान में रखते हुए डॉ. सुब्रह्मण्यन ने विभिन्न उदाहरणों के द्वारा इससे संबंधित समस्याओं पर प्रकाश डाला तथा उसके उचित प्रयोग संबंधी जानकारी दी।

इस कार्यशाला की यह विशेषता रही कि कारैकुड़ी हिन्दीतर भाषी क्षेत्र के होते हुए भी संस्थान के कर्मचारियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यशाला



श्री एन.यू. नायक अध्यक्षीय भाषण देते हुए



कार्यशाला में भाग ले रहे हुए डॉ. तुमुकानन

का संभालन जे.आर. गोपालकृष्णन, हिन्दू अधिकारी के द्वारा बड़े ही रोचकपूर्ण ढंग से संपन्न किया गया।

संस्थान के प्रशासन निबंधक श्री ए. मुत्तुकृष्णन ने अपने धन्यवाद ज्ञापन में कहा कि ऐसी कार्यशालाओं के निबन्धित आयोजन के द्वारा निश्चय ही संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रति जागरूकता फैलेगी तथा प्रतिभागी भी स्वेच्छा से अपने दैनंदिन कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करेंगे। उन्होंने हिन्दी अधिकारी को निदेश दिया कि महीने में कम से कम एक बार ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए। उनके धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला संपन्न हुई।

कृपया ध्यान दें

सीएसआईआर की सभी प्रयोगशालाओं के नोडल अधिकारियों/जनसम्पर्क अधिकारियों/हिन्दी अधिकारियों/अनुवादकों से अनुरोध है कि वे अपने संस्थान से सम्बन्धित गतिविधियों तथा वैज्ञानिक अनुसंधान उपलब्धियों/पुरस्कार/सम्मानों/कार्यशालाओं/संगोष्ठियों आदि से सम्बन्धित समाचार/सूचना सीएसआईआर समाचार में प्रकाशन के लिए हार्ड अथवा सॉफ्ट कॉपी में हिन्दी भाषा में ही संपादक, सीएसआईआर, समाचार को भेजने की कृपा करें।

संपादक, सीएसआईआर समाचार
ईमेल: deeksha@niscsir.res.in

प्रो. एस.ई. हसनैन ने पन्द्रहवां एस.एस.भटनागर व्याख्यान-2007 दिया

भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी), हैदराबाद ने 15वें एस एस भटनागर व्याख्यान का आयोजन किया। इसके अन्तर्गत 2 अप्रैल 2007 को प्रो. एस.ई. हसनैन, उपकुलपति, हैदराबाद विश्वविद्यालय तथा पूर्व निदेशक, सेंटर फॉर डीएनए एण्ड डायग्नोस्टिक्स हैदराबाद ने वार अगेन्स्ट टीबी: इज इट गोइंग टू बी ए लॉग ड्रग बैटल पर भटनागर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

प्रो. हसनैन जिनकी अनुसंधान अभिरूचियों में बैक्टीरिया वायरस वेरी लेंट जीन ट्रांसक्रिप्शन एण्ड एपोप्टोसिस तथा माइक्रोवैटीरियम ट्यूबरकुलोसिस का रोगजनन सम्मिलित है, ने कहा कि भारतीय उपमहाद्वीप की लगभग 30 प्रतिशत आबादी माइक्रोवैटीरियम ट्यूबरकुलोसिस से संक्रमित है जिसमें से 5-10 प्रतिशत लोगों को वारसटिक टीबी की बीमारी होती है।

भारत में विशेषकर गरीब तथा कुपोषित लोगों के मध्य यह बीमारी अपना सिर उठा रही है, जो ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय एजेंसियों तथा सरकारी स्रोतों की सहायता को नवीन स्वास्थ्य समस्याओं तथा एड्स तथा सांस जोकि अफ्रीका, यूरोप तथा दक्षिण पूर्व एशिया में प्रभावी है, की ओर मोड़ने की बजाय इस बीमारी के नियंत्रण के लिए



डॉ. एस.उस्ताराजान, पूर्व महानिदेशक, सीएसआईआर से सेवा स्मृतिकित्त प्राप्त करते हुए प्रो. एस.ई. हसनैन, साथ में रखे हैं डॉ. जे.एस. यादव, निदेशक, आईआईसीटी (बायीं ओर)

पुरजोर प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

प्रो. हसनैन का मत था कि औषधि निर्माता कम्पनियों को टीबी के विरुद्ध अपनी लड़ाई में डील नहीं देनी चाहिए, नहीं तो यह भारत में अपना सिर फिर उठा लेगी। नवीन तथा सस्ती दवाईयों को मार्केट में उपलब्ध कराना चाहिए। व्याख्यान बहुत ही सूचनात्मक था तथा सभी के द्वारा इसकी प्रशंसा की गयी।

इससे पूर्व डॉ. जे.एस. यादव, निदेशक, आईआईसीटी ने आईआईसीटी स्टाफ सदस्यों के एकत्रित समूह,

प्रयोगशालाओं के वैज्ञानिकों तथा उद्योगों के प्रतिनिधियों का स्वागत एक भव्य समारोह में किया तथा कहा कि एस.एस. भटनागर व्याख्यान का आरम्भ डॉ. ए.वी. रामा राव, पूर्व निदेशक, आईआईसीटी तथा सीएमडी एबीआरए प्रयोगशाला द्वारा डॉ. एस.एस. भटनागर की स्मृति में किया गया था, जो इसके संस्थापकों में से एक तथा सीएसआईआर के लिए पिता समान थे, के द्वारा 1 अप्रैल 1989 को आरआरएल, हैदराबाद के भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान में नाम परिवर्तन के अवसर पर किया गया था।

आईआईसीटी में राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी विज्ञान जनता के लिए - जन भाषा में का आयोजन

राष्ट्रीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, आईआईसीटी में 1-2 मार्च, 2007 को विज्ञान जनता के लिए - जन भाषा में विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिन्दी संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. विजय कुमार, अध्यक्ष, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने 1 मार्च की प्रातः 10.00 बजे संस्थान के प्रेक्षागृह में संगोष्ठी का उद्घाटन किया। डॉ. जे.एस. यादव, निदेशक, आईआईसीटी ने अपने स्वागत भाषण में अपनी तथा अपने साथियों की हिन्दी में विज्ञान लेख लिखने की वचनबद्धता को पुनः स्पष्ट किया। उन्होंने माना कि लोकप्रिय विज्ञान के माध्यम से विज्ञान को जनता तक ले जाना आवश्यक है।

संगोष्ठी के अवसर पर प्रकाशित स्वंदन विशेषांक स्मारिका तथा स्वंदन वार्षिक बुलेटिन के विमोचन के लिये मुख्य अतिथि प्रो. विजय कुमार ने निदेशक महोदय तथा आयोजन समिति को हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा संगोष्ठी के आयोजन के लिये बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की वैज्ञानिक संगोष्ठियां यदि राजभाषा हिन्दी में आयोजित होती रहीं तो सामान्य जनता भी विज्ञान की अच्छी जानकारी रखने लगेगी। संस्थान के प्रशासन नियंत्रक तथा संगोष्ठी संयोजक, श्री वाई.रामकृष्ण ने मुख्य अतिथि और प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्रीमती वी. झेलजा गिरि शर्मा, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी ने संगोष्ठी के उद्देश्य से अवगत कराया



उद्घाटन समारोह में स्वंदन विशेषांक स्मारिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि, प्रो. विजय कुमार (बाएँ से तीसरे)। उनके बांयी ओर हैं डॉ. जे.एस. यादव, निदेशक, आईआईसीटी और वांयी ओर प्रशासन नियंत्रक तथा संगोष्ठी संयोजक, श्री वाई. रामकृष्ण



जना न्याय नाटक के मंचन का एक दृश

तथा कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ. नसीमा, हिन्दी अधिकारी ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया।

इस संगोष्ठी में कुल 61 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सीएसआईआर की प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त अन्य सरकारी कार्यालयों से भी प्रतिभागी इस

संगोष्ठी में शामिल हुए। सीएसआईआर की विभिन्न प्रयोगशालाओं से 29 प्रतिभागी, आईआईसीटी से 19 तथा नौर सीएसआईआर अर्थात् अन्य केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों से 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस दो दिवसीय संगोष्ठी में कुल



सम्मान समारोह को अवसर पर भाषण देते हुए मुख्य अतिथि डॉ. एच.के. दुबे, निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खडगपुर (बाएं), बीच में हैं डॉ. ए.सी. कुंवर, वैज्ञानिक व कार्यकारी निदेशक, आईआईसीटी और बाईंती में, शैलजा गिरि राव, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी

4 सत्रों का आयोजन किया गया। प्रथम सत्र वैज्ञानिक दृष्टिकोण विषय पर आयोजित किया गया, जिसमें कुल 15 वैज्ञानिक लेख प्रस्तुत किए गए। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. ए.सी. कुंवर, वैज्ञानिक व कार्यकारी निदेशक, आईआईसीटी ने की। संस्थान के निदेशक डॉ. जे.एस. वाद्य

ने निर्मात कृषि - मागवानी के लिए केन्द्रीय फसल संरक्षण प्रौद्योगिकियों विषय पर अपना अभिभाषण दिया। दूसरा सत्र भाषाविदों का दृष्टिकोण विषय पर था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. आई.एस. सोरकर, सीआईआईएल, मैसूर ने की। इस सत्र में कुल 5 लेख प्रस्तुत किए गए।

1 मार्च 2007 को अन्त में आईआईसीटी संस्थान के कार्मिकों ने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया जिसमें हरप्य नाटिका नया न्याय का मंचन किया गया। दि. 2 मार्च 2007 को तृतीय सत्र पारिभाषिक शब्दावली अनुवाद में बौध्दगम्यता विषय पर था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री नारायण सिंह, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, बंगालुरु ने की। इस सत्र में भी 5 लेख प्रस्तुत किए गए।

2 मार्च 2007 को संगोष्ठी के अंतिम सत्र में सनापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. एच.के. दुबे, निदेशक, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खडगपुर थे। डॉ. दुबे ने अपने कोनोट सम्बोधन में कहा कि हिन्दी का उपयोग विज्ञान के प्रचार प्रसार में किया जाए तो मौखिक विज्ञान व सृजनात्मकता में बढ़ोत्तरी लगेगी। इस प्रकार हिन्दी की वैज्ञानिक संगोष्ठियों के आयोजन पर उन्होंने प्रशान्ता व्यक्त की।

अंत में वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

डॉ. डी.सी. गोस्वामी बाल साहित्य के लिए सम्मानित

डॉ. डी.सी. गोस्वामी, वैज्ञानिक-जी. पूर्वोत्तर विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संस्थान (पूर्व में क्षेत्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला), जोरहाट को उनकी बाल साहित्य के लेखक के रूप में प्रतिभा को सम्मानित करने के लिए राष्ट्रपति, भारत सरकार द्वारा इस वर्ष गणतन्त्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में मौजूद पर आमंत्रित किया गया। असमिया के एक सर्वप्रथम विज्ञान लेखक तथा संचारक



पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उन्होंने सोलह पुस्तकों का असमिया में अनुवाद भी किया है। उन्होंने बच्चों के लिए लगभग

70 अनुवादित साहित्य की श्रृंखला का सम्पादन तथा समन्वयन भी किया है। तीन संस्करणों को एया विज्ञान एन्साइक्लोपीडिया, बच्चों के एक अनुवादित एन्साइक्लोपीडिया के प्रमुख संपादक तथा एक राष्ट्रीय विज्ञान लोकशिक्षण पुस्तकार विजेता डॉ. गोस्वामी उन 50 विशेष बाल साहित्यकारों में से एक थे जिन्होंने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति महोदय से एक जमीनसंधिगत वार्तालाप कार्यक्रम में मुलाकात की।



स्कूली बच्चों के लिए छटा सीएसआईआर होरक जयंती आविष्कार पुरस्कार (सीडीजेआईए-2007)

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) भारत का प्रमुख औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास संगठन है। वर्ष 2002 में अपनी होरक जयंती के अवसर पर सीएसआईआर ने स्कूली बच्चों के लिए आविष्कार पुरस्कारों को शुरूआत की थी जोकि बच्चों में वैज्ञानिक रुचि के प्रति जागरूकता, रूचि और प्रोत्साहन को संसार किया जा सके।

समूचे विषय में 26 अप्रैल को प्रकाश पाए जाने वाले विषय वैज्ञानिक सम्पदा दिवस के अवसर पर सीएसआईआर 'स्कूली बच्चों के लिए छटे सीएसआईआर होरक जयंती आविष्कार पुरस्कार (सीडीजेआईए)' के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। प्रत्येक पुरस्कार विजेता बच्चों के पृथक आविष्कारक पुरस्कार के लिए भी पात्र होगा जिसमें पुरस्कार स्वरूप एक पत्रक एवं प्रमाण पत्र दिया जाता है।

आविष्कार को इस पुरस्कार के लिए प्रस्तुत आविष्कार का विवरण हिंदी अथवा अंग्रेजी में देना होगा जिसको शब्द सीमा 5000 से अधिक नहीं होगी, साथ ही इसका साठ (100 शब्दों से अधिक नहीं) देना होगा, जो एक अलग कागज पर निम्नलिखित वर्गीकरण करेंगे: नाम, उम्र की शरिख, स्कूल तथा आकासीय पता, कक्षा, टेलीफोन नं. (आवश्यक/प्रकृत), ई-मेल पता सहित उस स्कूल के प्रधानाचार्य/प्रधान द्वारा प्रमाणित (सिहर तथा शरिख सहित) और इसके माध्यम से भेजना होगा, जो कि निम्नलिखित बर्णनीकृत है।

राज्य, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अथवा अथक पुरस्कारों के लिये पहले से चयनित प्रस्तावों के मामले में सीडीजेआईए-2007 के विषयार्थ केवल ऐसे विषयों को ही प्रस्तुत किया जाये जिनमें उल्लेख किया गया हो।

पुरस्कार के लिये उन्हे आवेदन पर विचार किया जायेगा जिसके साथ अर्पित दस्तावेज और हिंदी अथवा अंग्रेजी में अर्पणपत्र 5000 शब्दों से अधिककर का विवरण संलग्न होगा। इस विवरण में आविष्कार की नवीन एवं अ-प्रकृत विशेषताओं और इससे होने वाले लाभों का विशेष उल्लेख करने हुए विषय विशेष का सारगर्भ-सम्पन्न विधि से निरूपण देना चाहिये।

किसी भी भारतीय स्कूल में पहले साल 31 जुलाई, 2007 को 18 वर्ष से कम उम्र का कोई भी विद्यार्थी आवेदन कर सकता है।

प्रस्तुत आविष्कार वैश्ववैज्ञानिक रूप से नवीन, अ-प्रकृत तथा उपयोगी होना चाहिये। यह आविष्कार एक नई संकल्पना अथवा विचार या किसी वर्तमान समस्या का समाधान अथवा पूर्णतः एक नई विधि/प्रक्रिया/तुक्ति/उपयोगिता हो सकता है। यह आविष्कार/आवश्यक नहीं है कि आविष्कार को पूर्ण रूप दिया गया हो, इस आविष्कार को संकल्पना को केवल शीघ्र, प्रोटोटाइप अथवा प्रयोगात्मक आकारों द्वारा सिद्ध किया हुआ होना चाहिये। आविष्कार/योजना-विधि/विधि अथवा आविष्कार के द्वारा प्रदान कराया/कार्यकारी का उचित रूप से उल्लेख किया जाना चाहिये और उनके प्रति आधार प्रकृत किया जाना चाहिये।

टीकित आवेदन पत्रों/कृत/कुरिपर द्वारा प्रदान, वैज्ञानिक सम्पदा प्रभाग, सीएसआईआर निम्नोक्त विनिर्देश, 14, सत्यमेव जयते मार्ग, सत्यमेव इन्स्टिट्यूट्स परिसर, नई दिल्ली - 110 067 को भेजे जाये तथा निम्नलिखित के अन्तर्गत कार्य करने पर 'सीडीजेआईए-2007' लिखा होना चाहिये। आप अपना आवेदन ई-मेल द्वारा भी इस पते head.ipundit@csir.res.in पर भेज सकते हैं।

दिनांक 15 अगस्त, 2007 को अथक इससे पहले प्रारण आवेदन पर ही पुरस्कार हेतु विचार किया जाएगा।

पुरस्कार: कुल निम्नोक्त 60 पुरस्कार हैं। प्रस्तावपत्र सहित निम्नलिखित नकद पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे:

| | |
|----------------------|-------------------------|
| प्रथम पुरस्कार (1) | रुपये 50,000/- |
| द्वितीय पुरस्कार (2) | प्रत्येक रुपये 25,000/- |
| तृतीय पुरस्कार (3) | प्रत्येक रुपये 15,000/- |
| चतुर्थ पुरस्कार (4) | प्रत्येक रुपये 10,000/- |
| पंचम पुरस्कार (50) | प्रत्येक रुपये 5,000/- |

पुरस्कार विजेताओं का नाम एक उच्चस्तरीय पत्रण सहित द्वारा किया जाएगा। आवश्यकता पड़ने पर इन छठे नए अर्पणपत्रों को दिल्ली अथवा किसी अन्य उपयुक्त स्थान पर साक्षात्कार के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। पुरस्कार पत्रण सचिव/सीएसआईआर का निम्नलिखित अलिखित होना तथा आवेदकों के लिए वास्तविक होना। इस बारे में किसी भी प्रकार की पुष्टता/संशय पर विचार नहीं किया जायेगा।

इन पुरस्कारों को प्रेषण सीएसआईआर के प्रधानाचार्य, 26 दिसंबर, 2007 को नई दिल्ली में की जायेगी तथा इसकी प्रथम केवल पुरस्कार विजेताओं को ही भेजी जायेगी।

अधिक जानकारी के लिए कृपया वेबसाइट www.csir.res.in देखें।

एनसीएल में प्रो. डॉबसन द्वारा दिया गया दूसरा प्रवर्तन एवं प्रौद्योगिकी उद्यम व्याख्यान

प्रोफेसर पीटर डॉबसन, शैक्षिक/अकादमिक निदेशक, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के बेगब्रोक विज्ञान पार्क ने दिनांक 2 अप्रैल, 2007 को राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एनसीएल), पुणे में विज्ञान से प्रौद्योगिकी तक की यात्रा नामक विषय पर दूसरा प्रवर्तन एवं प्रौद्योगिकी उद्यम व्याख्यान दिया। यह व्याख्यान सभी के लिए खुला था तथा इस अवसर पर पुणे स्थित उद्योग, शिक्षा जगत एवं अनुसंधान संस्थाओं से आए विद्वानों के अलावा भारत में ब्रिटिश पश्चिम के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

प्रो. डॉबसन, जो ऑक्सफोर्ड नैनोप्रौद्योगिकीविद एवं उद्यमी हैं, ने अपने व्याख्यान में विज्ञानाधारित प्रवर्तनों से सम्बन्धित मामलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने अपने व्याख्यान में प्रयोगशाला अनुसंधान से प्रौद्योगिकी का विकास और अन्त में उससे यथाराम्यव कौशलपूर्ण व्यापारिक उत्पादों के निर्माण के दौरान आने वाली चुनौतियों एवं उनसे सीखे हुए सबक को स्पष्ट करने हेतु उनके द्वारा स्थापित कम्पनियों के उदाहरण प्रस्तुत किए।

अपने व्याख्यान में प्रो. डॉबसन ने वैज्ञानिक संकल्पना पर प्रथम वैज्ञानिक प्रकाशनों/एकरवों के आरम्भ एवं उस संकल्पना पर आधारित उत्पाद के सम्भावित व्यवसायीकरण के बीच के समय-अन्तराल को स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि यदि वैज्ञानिक अनुसंधानों पर आधारित उत्पादों को सफलतापूर्वक बाजार में लाना है तो इस समय-अन्तराल को समझकर उस पर नियंत्रण पाना आवश्यक

है। प्रो. डॉबसन ने समय-अन्तराल को स्पष्ट करने हेतु उन उत्पादों एवं कम्पनियों के उदाहरण प्रस्तुत किए जिनसे वे जुड़े हुए थे। उन्होंने आगे बताया कि स्पष्ट बाजार-मुखता, समय पर वित्त प्रबन्धन एवं भागीदारी द्वारा किस प्रकार इस समय-अन्तराल को कम किया जा सकता है। प्रो. डॉबसन ने श्रोताओं को सलाह दी कि हमें वैज्ञानिक संकल्पनाओं को प्रौद्योगिकी के रूप में सीधे बाजार में प्रस्तुत करने के बजाय बाजार की आवश्यकता के अनुरूप अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी का विकास करना चाहिए। प्रो. डॉबसन ने विश्वास व्यक्त किया कि यदि हमें व्यापारिक रूप से व्यवहार्य प्रौद्योगिकी पर ध्यान केन्द्रित करना है तो वैज्ञानिकों में समस्याओं को हल करने तथा परिस्थिति के अनुकूल बनने की प्रवृत्ति का पोषण करना होगा।

प्रो. डॉबसन ने वर्ष 1999 में आरम्भिक काल की नैनोप्रौद्योगिकी कम्पनियों में से एक - ऑक्सोनिका पीएलसी - नामक कम्पनी की स्थापना की थी। अब यह कम्पनी एआईएम एक्सचेंज की सूची में शामिल है। यह कम्पनी ऑप्टिसॉल एवं एनविरैक्स नामक दो उत्पादों के माध्यम से पर्याप्त राजस्व प्राप्त कर रही है। ऑप्टिसॉल पर्सनल केयर उत्पादों हेतु एक विस्तृत स्पेक्ट्रम वाला पराबैंगनी अववृषक है। इस उत्पाद के द्वारा कम्पनी ने आरम्भिक स्तर पर नैनोप्रौद्योगिकी को बाजार में प्रस्तुत किया था ऑप्टिसॉल पराबैंगनी



प्रो. डॉबसन व्याख्यान देते हुए



डॉ. प्रकाश स्वराय भाषण देते हुए



डॉ. शिवराम, निदेशक, प्रो. डॉबसन को योग्यता प्रदान करते हुये

अव्युक्त अब 9 देशों में 14 कम्पनियों द्वारा 27 संस्करणों में बाजार में लाया गया है तथा नूट्स सॉलटान ऑन्स एंव टेस्को फाइनेरट नामक सनकेशर उत्पादों की श्रेणियों में शामिल किया गया है। एनविरोक्स नामक दुसरा उत्पाद सीरियम ऑक्साइड के नैनोकणों पर आधारित है जो डीजल इंजनों विशेष रूप से कई विकासशील देशों में पाए जाने वाले दो स्ट्रोक वाले डीजल इंजनों की कार्यक्षमता एवं पर्यावरणीय निष्पादन में महत्वपूर्ण सुधार लाता है। प्रो. डॉबसन ने अपनी ऑक्सफोर्ड बायोसेन्सर्स लि. नामक कम्पनी जो एन्जाइम क्रियात्मक माइक्रोइलेक्ट्रोड ऐरेज पर आधारित हस्त-वाहित उपकरण का निर्माण करती है, के उद्घाटन द्वारा यह बताया

कि प्रौद्योगिकी के विघटनकाष्ठ होने तथा उसमें कोई सुधार न होने की स्थिति में उसका लाइसेन्स किसी कम्पनी को देने के बजाय यह देखना चाहिए कि किस प्रकार से नई कम्पनियों के द्वारा उस प्रौद्योगिकी को बाजार में प्रस्तुत किया जा सकता है।

इससे पूर्व डॉ. वी. प्रेमनाथ, वैज्ञानिक, एनसीएल ने श्रोताओं का स्वागत करते हुए प्रवर्तन एवं प्रौद्योगिकी उद्यम/एन्टरप्राइज व्याख्यान शृंखला के आयोजन की संकल्पना को संक्षेप में स्पष्ट किया। उन्होंने प्रो. डॉबसन का श्रोताओं से परिवर्ण भी करवाया।

डॉ. एस. शिवराम, निदेशक, एनसीएल ने प्रो. डॉबसन को स्मृतिचिह्न प्रदान किया। इस सार्वजनिक व्याख्यान को ब्रिटिश परिषद एवं एनसीएल अनुसंधान फाउण्डेशन के प्रबुर समर्थन एवं सहायता से प्रायोजित किया गया था।

एनसीएल प्रवर्तन चार्क राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे का एक संसाधन केन्द्र है। इसका उद्देश्य धनार्जन हेतु प्रवर्तन एवं प्रौद्योगिकी के विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए व्यावसायिक उपकरणों एवं एनसीएल के बीच सहयोगी एवं सार्थक सम्बन्धों को बढ़ावा देना है।

वेचर सेक्टर भारत में पुणे क्षेत्र में स्थित संस्थाओं की वैज्ञानिक एवं अभियांत्रिकी क्षमताओं के समन्वयन द्वारा

प्रौद्योगिकी एवं ज्ञानाधारित उपकरणों को एकत्रित करके उनका पोषण करने व प्रयास करता है। वेचर सेक्टर एक व्यावसायिक केन्द्र है जो पदार्थ विज्ञान, रसायनों, जीवविज्ञान एवं अभियांत्रिकी के क्षेत्रों में वैज्ञानिक विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए उत्पाद एवं सेवाएं प्रदान कर वाले प्रौद्योगिकी उपकरणों से युक्त है। वेचर सेक्टर एनसीएल, पुणे द्वारा स्थापित गैरलाभकारी कम्पनी, उद्यमशीलता विकास केन्द्र का ट्रेडमार्क है।

एनसीएल प्रवर्तन चार्क एवं वेचर सेक्टर द्वारा आयोजित प्रवर्तन तथा प्रौद्योगिकी उद्यम व्याख्यान शृंखला का उद्देश्य है व्यावसायिक उपकरणों में रुचान्वरित तथा अनुसंधान पर आधारित प्रवर्तन के अनुकरणीय मामले प्रस्तुत करना ताकि उससे भारतीय वैज्ञानिकों, प्रौद्योगिकीविदों एवं व्यापारियों को प्रेरणा मिल सके। कौन्सिल विरयविद्यालय के सर रिचर्ड फ्रेण्ड ने दिनांक 18 दिसम्बर, 2006 को इस शृंखला का प्रथम व्याख्यान दिया था। इस व्याख्यान शृंखला को एनसीएल अनुसंधान फाउण्डेशन जिसे विभिन्न धनदाताओं, न्यासों, फाउण्डेशनों और कम्पनियों से धन के रूप में आर्थिक सहायता प्राप्त होती है, द्वारा आर्थिक रूप से धन उपलब्ध कराया जाता है।

ब्रिटिश परिषद का लक्ष्य ब्रिटेन एवं अन्य देशों के लोगों के बीच परस्पर हितकारी सम्बन्ध स्थापित करके ब्रिटेन की मौलिक संकल्पनाओं एवं उपलब्धियों को उन देशों तक पहुंचाना है।

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (निरुकेयर), डॉ. के.एस. कुष्णन मार्ग, नई दिल्ली-110012 के लिए एस.के.रस्तोगी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित, निरुकेयर प्रेस द्वारा मुद्रित।
 संपादक: वीशा मिश्र; अनुपाक: मीनाक्षी गौड़; डिजाइन एवं ले आउट: मल्लिकार्जुन सिंह; कर्पोरेशन: कृष्णा
 फोन: 25841846, 25846301, 2584303, 25842990, 25846304-7/37; ईमेल: PUBLIFORM, New Delhi; फैक्स: 25847062
 ई-मेल: csirsamachar@nicar.res.in वेबसाइट: http://www.nicar.res.in संचारण द्वारा न होने की स्थिति में फोन नं. 25841647 पर संपर्क करें

